।। जती को संमाद ।।

मारवाडी + हिन्दी

*

महत्वपूर्ण सुचना–रामद्वारा जलगाँव इनके ऐसे निदर्शन मे आया है की,कुछ रामस्नेही सेठ साहब राधाकिसनजी महाराज और जे.टी.चांड्क इन्होंने अर्थ की हुई वाणीजी रामद्वारा जलगाँव से लेके जाते और अपने वाणीजी का गुरु महाराज बताते वैसा पूरा आधार न लेते अपने मतसे,समजसे,अर्थ मे आपस मे बदल कर लेते तो ऐसा न करते वाणीजी ले गए हुए कोई भी संत ने आपस मे अर्थ में बदल नही करना है । कुछ भी बदल करना चाहते हो तो रामद्वारा जलगाँव से संपर्क करना बाद में बदल करना है ।

* बाणीजी हमसे जैसे चाहिए वैसी पुरी चेक नही हुअी,उसे बहुत समय लगता है। हम पुरा चेक करके फिरसे रीलोड करेंगे। इसे सालभर लगेगा। आपके समझनेके कामपुरता होवे इसलिए हमने बाणीजी पढनेके लिए लोड कर दी ।

|| अथ जती को संमाद लिखंते ||

|| साखी ||

त्रिगुटी में सुर तीन मिल || आगे सुर मिल सात ||
जत्ति बूझ सुखराम के || सुणे ब्रम्ह की बात || १ ||

त्रिगुटी में तीन सुर मिलते है और आगे सात सुर मिलते है । जत्ती,तुम मुझसे पूछो और मेरे पास से सतस्वरुपब्रम्ह की बात सुनो । || १ ||

त्रिगुटी हद में जाणिये || माया लग सब जोय ||
जती बूज सुखराम के || ब्रम्ह अगम मे होय || २ ||

अरे जत्ती,त्रिगुटी हद मे है और जहाँ तक माया है वहाँ तक सभी हद मे ही है । जती,तुम मुझसे पूछो ब्रम्ह यह तो अगम है,बेहद के पार है । || २ ||

माया ब्रम्ह की हद हे || ज्याहाँ लग हद पिछाण ||
जती बूज सुखराम के || ब्रम्ह अगम में जाण || ३ ||

माया और ब्रम्ह की हद्द है वहाँ तक हद्द जाणो । त्रिगुटी के इधर माया है और त्रिगुटी के उधर ब्रम्ह है । इन दोनों माया और ब्रम्ह के परे अगम है । जती,तुम मुझसे पूछो,मैं बताता हूँ वह सतस्वरुपब्रम्ह तो अगम में है । ||३||

बाजा रेग्या सेर मे || हम पूँता अगम अस्तान ||
जती बूज सुखराम के || ज्याँ देहे बिन धरणो ध्यान || ४ ||

सतगुरू सुखरामजी महाराज,जती से बोले,कि,तुम बाजा कहते हो तो तुम इधर के ही शहर में रह गया और मैं तो अगम स्थानपर जा पहुँचा हूँ । जती तुम मुझसे पूछो,वहाँ देह के बिना ध्यान करना पड़ता है । || ४ ||

कर माळा नही फेरिये || बिन रसणा को जाप ||
जती बूज सुखराम के || रंग बिन रंग दिखाय || ५ ||

वहाँ हाँथो से माला फेरनी नही पड़ती और जीभ के बिना जाप करना पड़ता है । जती,तुम मुझसे पूछो मैं तुम्हें बताता हूँ ,वहाँ तो स्वयं ही निरंजन है । वह काला भी नही और सफेद भी नही और वह पाँच तत्त्व में भी नही है,जती,तुम मुझसे पूछो,वहाँ रंग के बिना,रंग रुपी दिखायी पड़ता है । || ५ ||

सात धात गुण तीन नहीं || प्रगत नहिं पचीस ||
जती बूज सुखराम के || ज्याँ मूरत बिस्वा बीस || ६ ||

वहाँ सात धातू और तीन गुण(रज,तम व सत्)ये तीन गुण,त्रिगुणी माया भी नही और पच्चीस प्रकृती भी वहाँ नही है । जती,तुम मुझसे पूछो,मैं तुम्हे बताता हूँ ,वहाँ ये उपरोक्त न होते हुए सतस्वरुप मूर्ती बीस-बीसवे यानी सौ प्रतिशत है । || ६ ||

लखणे मे कुछ आवसी || देखण मे कुछ नाय ||

जती बूज सुखराम के ।। संत बतावे मांय ।। ७ ।।

वह मूर्ती दिखाई तो कुछ देती नही परन्तु थोड़ीसी मालुम पड़ती है । जती,तुम मुझसे पूछो,मैं तुम्हे बताता हूँ । सभी पहुँचे हुए संत,मूर्ती को अपने शरीर में ही बताते है । ।।७।।

सुध बुध ज्याहाँ पूँचे नही ।। मन पवनाँ नही जाय ।।
जती बूज सुखराम के ।। संत रहया लिव लाय ।। ८ ।।

वहाँ सुध याने समझ और बुद्धि भी पहुँचती नही है और वहाँ मन और श्वाँस भी नही जा सकता है वहाँ संत लव लगा रहे है यह मैं तुम्हें कहता हूँ । ऐसा सतगुरू सुखरामजी महाराज जती से बोले । ।। ८ ।।

कवत्त ।।

पिता सीस था बास हमारा ।। संख नाळ होय आया ।।
मात ग्रभ सो लिया बसेरा ।। वामें जीव कहाया ।। ९ ।।

पिता के मस्तक में याने भृगुटी में मैं रहता था । मैं भृगुटी से संखनाल के रास्ते से आकर माँ के गर्भ में बसेरा किया याने माँ के गर्भ आया । पिता के भृगुटी मे था तब तक मैं ब्रम्ह था । पिता की भृगुटी छोड्के माँ के गर्भ मे आनेसे जगतमे मै जीव कहलाया । ।। ९ ।।

सुभ सू असुभ ऊँच सूं नीचा ।। मै भुगतु भुगताया ।।
मेरा रिजक हमारे सारे ।। अंछया सूं चल खाया ।। १० ।।

मेरे किए हुए शुभ और अशुभ,नीच व ऊँच कर्म फल,मैं भोगता हूँ । क्रियेमान कर्म करना ये मेरे ही स्वाधीन है । मैं मेरी इच्छा से ही क्रियेमान कर्म करता हुँ और प्रालब्ध के रुप मे खाता हूँ । ।।१० ।।

अंतकाळ जो हुँती बासना ।। ज्याहाँ मै बासा पाया ।।
के सुखराम बासना ऊपर ।। कर असवारी आया ।। ११ ।।

अंत समय में मेरी जहाँ वासना थी वही मुझे रहने का स्थान मिला । सतगुरू सुखरामजी महाराज बोले कि मैं वासना के उपर सवारी करके आया हुँ । ।। ११ ।।

ना मै ब्राम्हण ना मै बैरागी ।। ना मै फरक फकिरा ।।
ना मै जंगम ना मै जोगी ।। ना मे सिध न पीरा ।। १२ ।।

मैं ब्राम्हण भी नही और वैरागी भी नही हूँ ,मैं फरक फकीर भी नही हुँ । मैं जंगम भी नही हुँ और जोगी भी नही हूँ तथा मैं सिद्ध भी नही और पीर भी नही हुँ । ।। १२ ।।

ना मै जती ना मै सॉमी ।। ना मै पाखंड होई ।।
ना मै भेष अभेष न सुणरे ।। लखसी बिरळा कोई ।। १३ ।।

मैं जती भी नही हूँ और मैं सन्यासी भी नही तथा पाखंडी भी नही हूँ । और मैं वेष लेकर, वेषधारी साधू भी नही हूँ और अभेष याने बिना भेष का भी नही हूँ । मुझे कोई बिरला ही जाणेगा । ।। १३ ।।

च्यारूं बरण जात नहिं मेरे ।। जती अरथ कर लीजे ।।
के सुखराम समझ बिन मिथ्या ।। ना पाछे जाब न दीजे ।। १४ ।।

मैं चारो वर्णो में न रहकर मेरी जात भी नही है तो जती,तुम इसका अर्थ कर लो । तुम समझे बिना पलटकर झूठा जवाब मत दो ऐसा सतगुरू सुखरामजी महाराज,जती से बोले । ।।१४।।

।। इति जती को संमाद संपूरण ।।